—ISSN-0974-2832,Vol. II, Issue-11-12 (Dec.2009—Jan.2010)

भारतीय गौरवशाली महिलाएँ

*डॉ. सुनीता मालवीय

शोधपत्र

भारत एक खुबसुरत देष है यहां के पर्वत, झरने, झीलें, बाग, नदियॉ, ऊंचे–ऊंचे पहाड, देष की सुन्दरता में चार चांद लगा देता है वैसे ही देष में भाग्यषाली नारियों के जन्म ने हमारे देष की काया ही पलट दी । भारत में वीरांगनाओं, विदुशियों, समाजसेवियों, देषभक्त महिलाओं की कमी किसी युग में कम नहीं रही । सीता, द्रोपदी, अहिल्या बाई, लक्ष्मीबाई, सोनिया गॉध ी आदि अनेक महिलाएं रही है जिन्होंने अपने समय में देष व समाज का नेतष्त्व किया है तथा एक नई दिषा दी । भारत में सदैव नारी शक्ति का सम्मान किया गया है । यत्र नार्यस्तु पूजयते, रमन्ते तत्र देवता । अर्थात जहां पर नारियों का सम्मान होता है वही पर देवताओं का वास होता है। भारत में हर समय नारियां देष–सेवा समाज सेवा, वीरता, स्वतंत्रता आंदोलन, साहित्य कला, विज्ञान प्रौद्योगिक, गायन, संगीत खेलकूद, पर्वतारोहण, अंतररिक्ष इत्यादि विधाओं में अग्रणी रही है।

सन् 1885 के समय भारतीय महिलाओं की स्थिती पराध ीनता और अपमान भरी जिन्दगी उनके लिए असहनीय थी तथा अंग्रेजों के द्वारा भारतीय महिलाओं पर अत्याचार किये जाते थे। उस समय मेडम भीकाजी कामा ने अपने गौरवषाली प्रतिभा का परिचय दिया 1907 में जर्मनी में अंतर्राश्ट्रीय सम्मेलन में भारत का प्रथम राष्ट्रीय ध्वज फहराया । उस समय भारत में कोई राष्ट्रीय झंडा नहीं था। उन्होंने अपने व्याख्यान के दौरान अपनी साडी को फाडकर उसे ही भारत का झंडा मानकर फहराया श्रोताओं को कहा कि यह मेरे राष्ट्र का झंडा है, इसे प्रणाम करो । एक महिला होते हुए भी विदेषों में रहकर भारत माता का संदेष दिया। बीहड गांव से संसद तक का सफर तय करने वाली फूलन देवी का जीवन एक मिसाल का प्रतीक है । फूलनदेवी अत्यंत गरीबी में पली बडी व 11 वर्ष की आयु में एक अधेड आदमी पुत्तीलाल से विवाह कर दिया गया अपने बूढे, निर्बल पति से जान बचाकर वह भागी तो पुलिस कर्मियों के द्वारा उसके साथ दुर्व्यवहार किया गया जैसे तैसे जेल से छुटकर वह जिन्दगी के जोखिम भरे रास्ते पर चलने लगी फूलन ने बंदूक उठा ली तथा सर पर कफन के रूप में लाल पट्टी बांध ली उसका संघर्श ऊंची जाति का विनाष करना तथा महिलाओं के साथ होने वाले अत्याचार दुर्व्यवहार को रोकना था। इस प्रकार समाज की दगी, कुचली एक अनपढ महिला ने डाकू से सांसद बनने का सफर तय किया। भारत तथा अन्य अनेक देषों में पुरूष–प्रधान समाज ने महिलाओं को एक प्रदार्थ या सम्पत्ति जैसा माना जाता था भारत जैसे देष में यौन– आधारित चेतना की उत्पत्ति, मध्यमवर्गो के प्रादुर्भाव और उनकी समस्याओं से जुडी हुई है । आज भी परिवारों में लडकियों को बोझ समझा जाता है षादी के बाद दहेज दानव व उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है । हमारे धर्म में नारी को देवी का दर्जा दिया गया है, युं तो उन्हें दया का अवतार, अन्नपूर्णा और बुराई का नाष करने वाली दुर्गा का अवतार माना गया है । जन्म से ही महिलाऐं भेदभाव का षिकार होती आ रही है । स्त्रीयों द्वारा पुरूष के साथ समानता की खोज एक सार्वभौमिक तथ्य बन चुकी है इस मॉग के कारण महिला आन्दोलनों, नारी वर्गीय कार्यक्रमों और संगठनों का जन्म हुआ। अतः हम कह सकते है कि भारती गौरवषाली महिलाओं ने समय समय पर अपना योगदान दिया भारत की प्रथम महिला राजदूत– श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित (रूस) (1947–49) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम महिला सभापति – एनी बेसेन्ट (1917) प्रथम आई. ए.एस. अधिकारी अन्ना राजम जार्ज 1950 व आई.पी.एस. अध िकारी किरण बेदी (1972) जिन्होंने समय–समय पर अपना योगदान दिया ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

दि सबजेक्षन ऑफ वीमन जे.एस. मिल। वीमन एण्ड इकानामिक्स अमेरिका की पार्किन्स गिलमेन 1898, भारतीय गौरवषाली महिलाएं, माधवानन्द सारस्वत मेरी वुल्स्टनकैफ्ट की पुस्तक–विन्डीकेषन ऑफ दी राइट्स आफ वीमेन।

* शासकीय महाविद्यालय, देपालपुर, इन्दौर (म.प्र.)